



# पत्र-पुष्प



**“अब चारों ओर शुभ भावना, शुभ कामना की लहर फैलाओ, साइलेन्स की शक्ति के प्रयोग करो”**

(याद पत्र 15-4-21)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा एकाग्रता के अभ्यास द्वारा, सागर के तले में जाकर अनुभवों के रत्न प्राप्त करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय देश और दुनिया के समाचार सुनते, बाबा के सभी बच्चे अपनी शुभ भावना, शुभ कामना की सकाश देने की सेवा तो कर ही रहे हैं। मीठा बाबा अभी समय प्रमाण यही इशारा दे रहे हैं कि बच्चे, साइलेन्स की शक्ति जमा करो। अभ्यास की प्रयोगशाला में बैठ स्वयं के संस्कारों पर, बीमारियों पर, भयभीत दुःखी व भटकती हुई आत्माओं पर योग के प्रयोग करो। कर्म का कड़ा बन्धन भी साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। मीठे बाबा के साथ-साथ समय के सूक्ष्म इशारों को समझते हुए आप सभी अपने-अपने स्थानों पर विशेष योग तपस्या कर रहे होंगे। ड्रामा की यह विचित्र सीन जब बाहर की सेवाओं को रोक कर स्व की स्थिति को शक्तिशाली बनाने का इशारा दे रही है, तो सभी बाबा के बच्चे अन्तर्मुखता की गुफा में बैठ, मनोबल की शक्ति जमा कर, मन्सा सेवा के अभ्यासी बनो। क्यों, क्या, कैसे की हलचल में आने के बजाए सेकण्ड में संकल्पों को फुलस्टाप लगाए अपनी एकरस, एकाग्र स्थिति में स्थित हो, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्पों से मन्सा सकाश देने की सेवा करते रहो। परिस्थितियां तो दिनप्रतिदिन भयानक रूप लेती जा रही हैं, इसलिए बाबा कहते बच्चे, अब चारों ओर अपने सेवाकेन्द्र वा प्रवृत्ति के स्थानों को शान्ति कुण्ड बनाओ, इसके लिए योग का किला मजबूत करो। जहाँ पवित्र आत्मायें निवास करती हैं, वहाँ योग का किला बन ही जाता है, उस किले में स्वयं भी सेफ रहते और वहाँ के वायब्रेशन विश्व की आत्माओं को भी शान्ति की अनुभूति कराते हैं। तो अभी समय प्रमाण सभी बाबा के बच्चे बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा बाह्यमुखता की बातों से किनारा कर, अपने सेवास्थानों को ऐसा तपस्या कुण्ड बनाओ जो हर समस्या समाधान के रूप में परिवर्तित हो जाए। बोलो, ऐसा ही अटेन्शन रख सभी तपस्या कर रहे हो ना!

इस समय मधुबन के भी सभी स्थानों को बाबा ने शान्ति कुण्ड बना दिया है। किसी भी प्रकार की कोई हलचल नहीं है, सब सेवायें बन्द हैं। हर एक यज्ञ की नियमित दिनचर्या को निभाते हुए, मानसरोवर के नये भवन में (नदी किनारे) जाकर सभी अलग-अलग गुप में विशेष तपस्या कर रहे हैं। बाबा कहते बच्चे, इस तपस्या द्वारा ही स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न होगा।

अब तो हमारी त्रिमूर्ति दादियां भी अव्यक्त-वतन वासी बन प्यारे बापदादा के इस महान कार्य को सम्पन्न कराने में उनकी राइट हैण्ड बन गई हैं। जरूर स्थापना का रहा हुआ कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न होगा और यह दुःख अशान्ति की दुनिया बदलकर अपनी नई स्वर्णिम दुनिया आ जायेगी।

बाकी आप सभी स्वस्थ होंगे। अपने स्टेट की गाइड लाइन्स प्रमाण इस कोरोना महामारी से अपनी और सर्व की सुरक्षा करते आगे बढ़ते चलो। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के. रतनमोहिनी



# ये अव्यक्त इशारे



मई 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

## (अ) योग के प्रयोग द्वारा सिद्धि स्वरूप बनो

1) जैसे साइंस प्रयोग में आती है तो समझते हैं कि साइंस अच्छा काम करती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करो, इसके लिए एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाओ। एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कन्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है।

2) आप अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने संकल्पों को सिद्ध कर सकते हो। वह रिद्धि सिद्धि है अल्पकाल, लेकिन याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी। वह रिद्धि सिद्धि यूज करते हैं और आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करो।

3) अभ्यास की प्रयोगशाला में बैठ, योग का प्रयोग करो तो एक बाप का सहारा और माया के अनेक प्रकार के विघ्नों का किनारा अनुभव करेंगे। अभी ज्ञान के सागर, गुणों के सागर, शक्तियों के सागर में ऊपर-ऊपर की लहरों में लहराते हो इसलिए अल्पकाल की रिफ्रेशमेंट अनुभव करते हो। लेकिन अब सागर के तले में जाओ तो अनेक प्रकार के विचित्र अनुभव कर रत्न प्राप्त करेंगे।

4) योग की शक्ति जमा करने के लिए कर्म और योग का बैलेंस और बढ़ाओ। कर्म करते योग की पॉवरफुल स्टेज रहे - इसका अभ्यास बढ़ाओ। जैसे सेवा के लिए इन्वेन्शन करते जैसे इन विशेष अनुभवों के अभ्यास के लिए समय निकालो और नवीनता लाकर के सबके आगे एक्जाम्पुल बनो।

5) वर्तमान समय के प्रमाण सर्व आत्मायें प्रत्यक्षफल अर्थात् प्रैक्टिकल प्रूफ देखने चाहती हैं। तो तन, मन, कर्म और सम्पर्क-सम्बन्ध में साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करके देखो। शान्ति की शक्ति से आपका संकल्प वायरलेस से भी तेज किसी भी आत्मा प्रति पहुंच सकता है। इस शक्ति का विशेष यंत्र है 'शुभ संकल्प' इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहे वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो।

6) शान्ति की शक्ति का प्रयोग पहले स्व के प्रति, तन की व्याधि के ऊपर करके देखो। इस शक्ति द्वारा कर्मबन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। यह कर्मभोग, कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ - यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब-किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे।

7) योग का प्रयोग अर्थात् अपने शुद्ध संकल्पों का प्रयोग तन पर, मन पर, संस्कारों पर अनुभव करते आगे बढ़ते जाओ, इसमें एक दो को नहीं देखो। यह क्या करते, यह नहीं करते, पुराने करते वा नहीं करते, यह नहीं देखो। पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊं क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरुषार्थ की बात है। जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे, वृद्धि को पाते रहेंगे तब एक एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा।

8) जैसे वाणी की प्रैक्टिस करते-करते वाणी के शक्तिशाली हो गये हो, ऐसे शान्ति की शक्ति के भी अभ्यासी बनते जाओ। आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे क्योंकि जितना जो महान् शक्तिशाली होता है वह अति सूक्ष्म होता है। तो वाणी से शुद्ध-संकल्प सूक्ष्म हैं इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा।

9) जहाँ वाणी द्वारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है तो कहते हो - यह वाणी से नहीं समझेंगे, शुभ भावना से परिवर्तन होंगे। जहाँ वाणी कार्य को सफल नहीं कर सकती, वहाँ साइलेन्स की शक्ति का साधन शुभ-संकल्प, शुभ-भावना, नयनों की भाषा द्वारा रहम और स्नेह की अनुभूति कार्य सिद्ध कर सकती है।

10) कोई भी खजाना कम खर्च करके अधिक प्राप्ति कर लेना, यही योग का प्रयोग है। मेहनत कम सफलता ज्यादा इस विधि से प्रयोग करो। जैसे समय वा संकल्प श्रेष्ठ खजाने हैं, तो संकल्प का खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो, इसको कहते हैं कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100 गुणा हो इससे समय की वा संकल्प की जो बचत होगी वह औरों की सेवा में लगा सकेंगे, दान पुण्य कर सकेंगे, यही योग का प्रयोग है।

11) प्रयोगी आत्मा संस्कारों के ऊपर, प्रकृति द्वारा आने वाली परिस्थितियों पर और विकारों पर सदा विजयी होगी। योगी वा प्रयोगी आत्मा के आगे ये पांच विकार रूपी सांप गले की माला

अथवा खुशी में नाचने की स्टेज बन जाते हैं।

12) जैसे साइन्स की शक्ति का प्रयोग लाइट के आधार पर होता है। अगर कम्प्यूटर भी चलता है तो कम्प्यूटर माइट है लेकिन आधार लाइट है। ऐसे आपके साइलेंस की शक्ति का भी आधार लाइट है। जब वह प्रकृति की लाइट अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो इससे क्या नहीं प्रयोग हो सकता!

13) जैसे कोई भी साइन्स के साधन को यूज करेंगे तो पहले चेक करेंगे कि लाइट है या नहीं है। ऐसे जब योग का, शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करते हो तो पहले ये चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रयोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो।

14) इस अभ्यास को शक्तिशाली बनाने के लिये पहले अपने पर प्रयोग करके देखो। हर मास वा हर 15 दिन के लिये कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्रयोग करके देखो क्योंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं,

तो पहले अपने ऊपर प्रयोग करके चेक करो, कोई भी पेपर आया तो किस गुण वा शक्ति का प्रयोग करने से कितने समय में सफलता मिली? जब स्व के प्रति सफलता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वतः ही बढ़ता जायेगा।

15) योग का प्रयोग करने के लिए दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को और अण्डरलाइन करो। मूल फाउण्डेशन - अपने संकल्प को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनाओ। कोई कितना भी भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव समझता हो लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। यही है योग का प्रयोग।

16) दिव्य-बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित हो, अव्यक्त वतनवासी बन विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। योग के प्रयोग द्वारा दुःखी-अशान्त आत्माओं को शान्ति और शक्ति की सकाश दो।

## (ब) अब योगबल द्वारा सफलता सम्पन्न बने

17) जितना आप अपनी अव्यक्त स्थिति में स्थित होते जायेंगे उतना बोलना कम होता जायेगा। कम बोलने से ज्यादा लाभ होगा फिर इस योग की शक्ति से सर्विस स्वतः होगी। योगबल और ज्ञान-बल जब दोनों इकट्ठा होता है तो दोनों की समानता से सफलता मिलती है।

18) आगे चलकर अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आयेंगी उन्हें पार करने के लिए बहुत पावरफुल स्थिति चाहिए, अगर योगयुक्त होंगे तो जैसा समय वैसा तरीका टच होगा। अगर समय प्रमाण युक्त नहीं आती है तो समझना चाहिए योगबल नहीं है। योगबल वाली आत्मा को आने वाली परिस्थिति का पहले से ही पता होगा इसलिए वह योगयुक्त स्थिति में रह हर परिस्थिति को सहज पार कर लेंगे।

19) अब योगबल द्वारा आत्माओं को जगाने का कर्तव्य करो और सर्व शक्तिवान बाप की पालना का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाओ। साकार रूप द्वारा भी बहुत पालना ली और अव्यक्त रूप द्वारा भी पालना ली, अब अन्य आत्माओं की ज्ञान-योग से पालना करके उनको भी बाप के सम्मुख और समीप लाओ।

20) अब कोई भी आधार पर जीवन का आधार नहीं होना चाहिए अथवा पुरुषार्थ भी कोई आधार पर नहीं होना चाहिए,

इससे योगबल की शक्ति के प्रयोग में कमी हो जाती है। जितना जो योगबल की शक्ति का प्रयोग करते हैं उतना उनमें वह शक्ति बढ़ती है। योगबल अभ्यास से बढ़ता है।

21) जैसे कोई भी बात सामने आती है, तो स्थूल साधन फौरन ध्यान में आ जाते हैं लेकिन स्थूल साधन होते हुए भी ट्रायल योगबल की ही करनी चाहिए। जैसे साइंस के यंत्रों द्वारा दूर का दृश्य सम्मुख अनुभव करते हो, वैसे साइलेंस की शक्ति से भी दूरी समाप्त हो सामने का अनुभव आप भी करेंगे और अन्य आत्मायें भी करेंगी, इसको ही योगबल कहा जाता है।

22) जैसे साइंस के साधन का यंत्र काम तब करता है जब उसका कनेक्शन मेन स्टेशन से होता है, इसी प्रकार साइलेंस की शक्ति द्वारा अनुभव तब कर सकेंगे, जबकि बापदादा से निरन्तर क्लीयर कनेक्शन और रिलेशन होगा।

23) योगबल जमा करने के लिए मन्सा बहुत शुद्ध और श्रेष्ठ चाहिए। मन्सा शक्ति ही सेफ्टी का साधन है। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर हो तब परमात्म शक्तियों का अनुभव कर सकेंगे।

24) व्यक्तियों को तो कोर्स करा देते हो लेकिन प्रकृति को वाणी की शक्ति से नहीं बदल सकते। उसके लिए योगबल चाहिए। योग में जब बैठते हो तो शान्ति सागर के तले में चले जाओ। संकल्प भी शान्त हो जाएं, बस एक ही संकल्प हो “आप और बाप” इसी को ही योग कहते हैं। ऐसा पावरफुल योग हो जो बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जाएं, इससे योगबल जमा होगा और वह शक्ति अपने आप कार्य करेगी।

25) जैसे साइन्स का बल अन्धकार के ऊपर विजय प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे योगबल सदा के लिये माया पर विजयी बनाता है। स्वप्न में भी उन्हें माया हार नहीं खिला सकती। स्वप्न में भी कमजोरी नहीं आ सकती। योगबल से प्रकृति के तत्व भी परिवर्तन हो जाते हैं।

26) योगबल अर्थात् साइलेन्स की शक्ति - कम मेहनत, कम खर्चे में बालानशीन कार्य करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति - समय के खजाने में इकॉनामी करा देती है अर्थात् कम समय में ज्यादा सफलता पा सकते हो। यथार्थ इकॉनामी है - एकनामी बनना। एक का नाम सदा स्मृति में रहे। ऐसा एकनामी वाला इकॉनामी कर सकता है। जो एकनामी नहीं वह यथार्थ इकॉनामी नहीं कर सकता।

27) संगमयुग की विशेष शक्ति साइलेन्स की शक्ति है। संगमयुगी आत्माओं का लक्ष्य भी है कि अब स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। शान्त स्वरूप रहना और सर्व को शान्ति देना - यही संगमयुगी आत्माओं का मुख्य लक्षण है। वर्तमान समय विश्व में इसी शक्ति की आवश्यकता है, इसको ही योगबल कहा जाता है।

28) योगबल वाली शान्त स्वरूप आत्मा एकान्तवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण विशेष दो शक्तियां सदा प्राप्त होती हैं - एक परखने की और दूसरी निर्णय करने की। यही दो विशेष शक्तियाँ व्यवहार वा परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं को हल करने का सहज साधन हैं।

29) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने के लिए योगयुक्त बनकर साइलेन्स की शक्ति द्वारा परखने और निर्णय करने की शक्ति को अपनाओ। यदि माया के भिन्न-भिन्न रूपों को परख नहीं सकेंगे तो उसे भगा भी नहीं सकेंगे क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए। एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है।

30) अब चारों ओर सेवाकेन्द्र वा प्रवृत्ति के स्थान को शान्ति कुण्ड बनाओ, इसके लिए योग का किला मजबूत करो। किले को मजबूत करने का साधन है - प्युरिटी। जहाँ पवित्र आत्मायें रहती हैं वहाँ के वायब्रेशन विश्व की आत्माओं को शान्ति की अनुभूति कराते हैं। पवित्रता की शक्ति महान शक्ति है, उसकी महानता को जानकर मास्टर शान्ति देवा बनो। कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरूप, पवित्र स्वरूप में स्थित होकर शान्ति की किरणें दो तो अशान्त भी शान्त हो जायेंगे।

31) योगबल द्वारा मन्सा सेवा करने के लिए अपने मन-वचन-कर्म की पवित्रता से साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ तब किसी भी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि को परिवर्तन कर सकते हो। स्थूल में कितनी भी दूर रहने वाली आत्मा हो, उनको सम्मुख का अनुभव करा सकते हो, इसको ही योगबल कहा जाता है।

## त्रिमूर्ति दादियों द्वारा समय प्रति समय मिली हुई अनमोल प्रेरणायें (अमृत-वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

**“मेरा बाबा शब्द ही हर परिस्थिति में सेफ्टी का साधन है,  
हिम्मत, मदद लेने का आधार है” (दादी गुल्जार - 2005)**

आप सभी ने अपने भाग्य की बातें सुनी और सबसे पहला भाग्य तो हम सभी हर कल्प में बाबा के भाग्यवान बच्चे बनते आये हैं। अभी भी बने हैं और हर कल्प में हम ही बनेंगे, यह कितना बड़ा भाग्य है। बाबा कहते हैं 16 हजार की माला में भी जो लास्ट नम्बर का दाना है वो भी बहुत भाग्यवान है। कई समझते हैं हमारा क्या भाग्य है? इतना बड़ा भाग्य तो दिखाई नहीं

देता है क्योंकि सोचते हैं कि मेरे में तो कोई खास विशेषता दिखाई नहीं देती है, न कोई इतना बड़ा भाग्य है। लेकिन बाबा हम हर बच्चे को भाग्यवान की नज़र से ही देखते हैं। और कोई भी विशेषता आप में न हो, ऐसा नहीं हो सकता। आपकी एक विशेषता बाबा को बहुत पसंद आई इसलिए आपको अपना बना लिया। आपने पहचान करके दिल से कहा ‘मेरा बाबा’ तो यह

विशेषता कम नहीं है। तो मेरे लिए बाबा आया है, मुझ अर्जुन को ज्ञान सुनाने लिए आया है और मैं ही बाबा का विशेष बच्चा हूँ, इसी विशेष रूप से बाबा हरेक को देखता है क्योंकि कोटों में कोई तो आप हो ही ना। कोई में भी कोई हो क्योंकि बाबा को तीसरे नेत्र से पहचान के सम्बन्ध जोड़के कहा है कि 'मेरा बाबा'। तो जहाँ मेरापन होता है वहाँ अधिकार होता है लेकिन उस अधिकार से हम याद नहीं करते हैं तो फिर बाबा की मदद का अनुभव इतना नहीं होता है। बाबा जो श्रीमत देते हैं, उस पर हाँ जी, हाँ जी करते चलो तो हज़ूर आपके आगे हाज़िर हो जायेगा। दिल से बाबा कहने वाले को बाबा की मदद का अनुभव न हो, यह हो ही नहीं सकता, यह असम्भव है। लेकिन मदद लेने की विधि है 'हिम्मत'। हमें पहले हिम्मत तो रखनी होगी, हम हिम्मत का एक कदम उठायेगे तो बाबा पदमगुणा मदद करेगे। बाबा हमारे साथ कम्बाइण्ड है, तो वो मददगार बनने में कैसे भूल कर सकता। सिर्फ हम उस अधिकार से बाबा को अपना बनाकर रखें।

बाबा कहते हैं मैं सर्वशक्तिवान हूँ, तो बच्चे क्या हुए? मास्टर सर्वशक्तिवान। बाप की जो प्रॉपर्टी, वह बच्चे की प्रॉपर्टी नेचुरली हो ही जाती है। तो बाबा के पास कौन-सी प्रॉपर्टी है? शक्तियों की, गुणों की प्रॉपर्टी यही तो शिवबाबा की प्रॉपर्टी है। उसके हम मालिक हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। बाबा ने कहा हे मेरे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे! जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता हो, उन शक्तियों को ऑर्डर करो तो वो शक्ति हाज़िर हो जाये। बाबा कहते हैं तुम अपने इस स्वमान को पहचानो, भले कोई और स्वमान याद नहीं आता है - "सिर्फ बाबा मेरा है", यह एक शब्द ही याद कर लो तो भी नशे और खुशी में रहेगे।

मास्टर सर्वशक्तिवान अगर कहे कि मेरे में सहनशक्ति नहीं है इसलिए मैं फेल हो जाता हूँ। मेरे में समाने की शक्ति थोड़ी कम है, लेकिन जो अपनी चीज़ है वो समय पर काम न आये तो फिर क्या फायदा? तो यही एक शब्द याद करो कि मेरा बाबा 'करावनहार' है। जैसे कर्मन्द्रियों से काम कराने वाली मैं करावनहार आत्मा हूँ, तो मालिक कर्मन्द्रियों से अच्छा काम ही करायेगा ना। ऐसे बाबा करावनहार करा रहा है। मैं तो निमित्त हूँ। फिर मैं और मेरापन कहाँ से आयेगा! बाबा कहते आप सिर्फ कर्मकर्ता नहीं हो, आप कर्मयोगी हो। योग और कर्म दोनों का बैलेंस हो तो हर कर्म शक्तिशाली ही होगा, क्योंकि सर्वशक्तिवान की याद में किया हुआ कर्म है। जो कर्मयोगी बनके कर्म करता है उनके हर कर्म में सफलता उनका जन्मसिद्ध अधिकार हो जाता है। यह तो बहुत सहज है लेकिन इसके लिए बाबा कहते सिर्फ तुम अनेकों की यादों को भूल एक की याद में रहने के अभ्यासी बनो। एक बाबा के सम्बन्ध में बाकी सर्व सम्बन्धों का अनुभव करो। ऐसे अनेकों को याद करना सहज नहीं है। तो पहले हिम्मत का एक कदम उठाना, हमारा काम है। हिम्मत कभी नहीं हारो। चाहे आप में कई कमजोरियाँ हैं लेकिन बाबा कम्बाइन्ड है तो उससे मदद लो, साथ की शक्ति से सहयोग लो। भगवान के महावाक्य कब टल नहीं सकते हैं इतना विश्वास अगर होगा तो कभी आपका भाग्य जा नहीं सकता। माया का कोई भी विघ्न आपके पास आये, उस समय दिल से बाबा कहो तो वो खत्म हो जायेगा। तो हर परिस्थिति में बाबा ही सेफ्टी का साधन है।

**“माँ बाप से दुआयें लेनी हैं तो समझ से अच्छे कर्म करो,  
सब कुछ समेट लो, सफल कर लो”**

(दादी जानकी - 2006)

नये युग में आने की तैयारी करके हम सब तैयार बैठे हैं ना! ऊपर जाके नीचे आना है। यहाँ से सबकुछ समेट लिया, समर्पण हुए तो सफल हो गया इसलिए बाकी कुछ काम रहा नहीं। तो हम सब अब फ्री है ना! समर्पण माना मेरा कुछ नहीं। बाकी कुछ रहा हुआ हो तो वो भी समेट लो और जितना हो सके सफल कर दो। यह तीनों काम अपनी समझ से करने हैं, यह समझ तो हर एक को बाबा ने दी है। तो उस समझ से अच्छे कर्म करके ले लो दुआयें माँ बाप की। ऐसे लौकिक अलौकिक कर्म करो जो दुआयें प्राप्त होती रहें। जिसने तीन बाप लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक को जाना उसने सब कुछ जाना। प्रवृत्ति में रहने वाले अगर लोक-

लाज और मोह को छोड़ें तो बहुत नम्बर ऊंचा है। बाबा को हर प्रकार के बच्चे चाहिए। कुमार हो तो कैसा? मातायें हो तो कैसी? शिवशक्ति, क्योंकि कम्बाइन्ड हैं। भाईयों की बात सुनो तो वो महावीर हैं। कन्याओं की बात सुनो तो उनका एक कन्हैया है, मैं तेरा हूँ इसलिए तुम ख्याल मत करो। कन्या को कुछ अपने हक का मिला तो ठीक, नहीं तो भी ठीक। मिला तो सफल करो जैसे डॉ. निर्मला को मिला तो उसने सफल किया, अच्छा किया, ऐसे जिसको सफल करने का अक्ल है ना वो राजाओं का राजा बन सकता है। और कुछ सेवा न कर सको तो सफल करो और कराओ। किसी से कुछ मांगो नहीं, नेवर।

मातृ स्नेह क्या होता है? मातृ स्नेह में रहम है, सच्चाई है, प्यार है। बाबा ने माता का रूप इसीलिए धारण किया है। ब्रह्मा हमारी माँ भी है तो बाप भी है। स्नेह बहुत है, सच्चाई है, उस शक्ति से माँ कल्याणकारी है। वैसे बाबा कहते आत्मा भाई भाई है, लेकिन सेवा में मातृ स्नेह चाहिए। रूहानी दृष्टि के लिए भाई-भाई है। दृष्टि ऐसी हो जो दृष्टांत हो, न्यारा बनने से बाबा का प्यार मिलता है इलाही.... डिटैच, न्यारा, साक्षी है तो बाबा साथी है। हम जो बच्चे हैं ना, सच्चे हैं, पक्के हैं। उनमें ज्यादा डिफरेंट

नहीं है, एक ही हैं क्योंकि एक की श्रीमत पर चलने वाले हैं। पुरुषार्थ की लेवल भी डिफरेंट वाली न हो।

सेकेण्ड में कहाँ बैठे भी ऐसे वायब्रेशन, ऐसी वृत्ति हो जो अनेक बाबा के बच्चे जो सम्पर्क में हैं उनको कुछ न हो। कोई भी काम करने के लिए रूकावट कुछ नहीं है। रूकावट को हम क्रियेट करते हैं, बाकी है ही नहीं। सच्ची दिल से कोई देखे तो किसी को कोई रोकता नहीं है, इसलिए कोई रूकावट है ही नहीं। पुरुषार्थ में सच्ची दिल नहीं है तो बहानेबाजी बहुत है।

## “थोड़ी भी सुस्ती ज्ञान मार्ग में वैरी है, सुस्ती को ऐसे अवाइड कर दो जो उसका नाम निशान भी ना रहे”

(दादी जानकी - 2006)

1) संगमयुग पर बाबा सन्मुख आता है, एक है मनमुख, दूसरा है सन्मुख, तीसरा है गुरुमुख। मन या तो अपने मुख को देखता है या दूसरे के मुख को देखता है। है तो भक्ति की बातों पर मनमुख और गुरुमुख में बहुत फर्क है। गुरुमुख सदा ही गुरु को देखता है। जब सन्मुख बाप मिला तो गुरुमुख बन गये।

2) अन्तिम जन्म की यह अन्तिम घड़ियां हैं, जो करना है अभी कर लो। जैसे ब्रह्मा बाबा को शिवबाबा ने पक्का कराया, ये तुम्हारे बहुत जन्म के अन्त का जन्म है, तुम वही श्रीकृष्ण की आत्मा हो, चक्र पूरा किया है, अब तुमको फिर से वही बनना है। तो उसको अपना बना लिया है। ऐसा हमारा हाल है?

3) एक-एक रूहरिहान करे आपस में। एक है चिटचैट, दूसरी है रूहरिहान, तीसरी होती हैं बातें। चिटचैट में हंसना बहलना होता है। बातों में तो कभी खिटपिट भी होती है, मतलब की बात कर। मतलब की बात वो हैं जो बाबा सुनाता है। जिसमें हमारा भी भला और औरों का भी भला। पर रूहरिहान वन्डरफुल है। रूह अपने से बात करता है, बाबा से बात करता है फिर औरों से बात करता है। रूह को सिखलाने वाला बाबा है। बाबा, बाप के रूप में सिखलाता है, सतगुरु के रूप में सिखलाता है, वो बातें अच्छी तरह से अन्दर रूह में चली जायें। तो बाबा हमारे से रूहरिहान करेगा। मुख से भी करेगा पर अन्दर भी करेगा।

4) अभी अन्तिम जन्म की अन्तिम घड़ियां हैं इसलिए एक-एक घड़ी सफल हो। दिन में भी आठ घड़ी होती है। आठ घड़ी में भी देखें, हर घड़ी अच्छी बीतें। इतना अटेन्शन रख हर घड़ी चेकिंग हो कि मैंने इन आठों घड़ियों में क्या उन्नति को पाया।

5) हमको अभी क्या न्यूनेस (नवीनता) लानी है? जैसे दिन और रात में अन्तर है, वैसे नवीनता इतनी लानी है। गाया ही जाता है पुराना साल पूरा हुआ माना पुरानी बात पूरी हुई, नया सूर्य उदय हुआ है। कुछ तो रोशनी होते भी अन्धकार में रहते हैं। कहते हैं जागा तो है, पर नींद आ रही है। थोड़ी भी सुस्ती ज्ञान मार्ग की वैरी है। सुस्ती को अवाइड करना है, उसका नामनिशान न रहे तो नवीनता आयेगी। न्यूनेस में उमंग-उल्लास हो, न्यूनेस प्रेरणा देने लायक हो। नवीनता क्या है, नयनों के सामने वो दृश्य घूम रहा है, और कुछ देखते नहीं देखते हैं क्योंकि मूर्ति बन रहे हैं, पूज्य बन रहे हैं।

6) बाबा ने रूह को जो सिखाया है वही मैं बाबा से बात करती हूँ, तो बाबा और प्यार से बात करता है। फिर कहता है ये बातें औरों को सुनाओ। यह ये करता है, वो यह करता है, उसका चिन्तन मुझे क्यों करना है, फिर बाबा ने जो कहा है वो भूल जाता है, इसमें फिर जल्दी करेक्शन चलती है, ये ठीक नहीं करता है। बड़ी हूँ ना, अरे कर रहा है तू देख तो सही, इसको यह नहीं करना चाहिए, क्या जरूरत है, कर रहा है ना। करेक्शन करना या जल्दी कमेन्ट देना। इसमें गुल्जार दादी इतनी गम्भीर है, मजाल है जो कुछ बोले। बोलेगी लेकिन जो आवश्यक है। हमको पूज्यनीय मूर्त बनना है। मन्दिर में यादगार उन्हीं का है जो ऐसे बने हैं।

7) पांच तत्वों का जो शरीर है उसमें आत्मा पवित्र सतोप्रधान बन रही है। यह पांच तत्वों के शरीर का जरा भी नाम रूप याद न हो। कहाँ रहती थी किस धर्म की थी, जैसे अनजान हो गये। मरने के बाद दूसरे जन्म में कुछ याद थोड़ेही है। तो आंखे, बोलचाल सब बदल जाना चाहिए।

8) हम एन्जिल जैसे हैं ना! एन्जिल की पूजा नहीं होती है, पर उसके लिए प्यार है। एन्जिल से प्यार क्यों है? क्योंकि वो नाम रूप की बातों से परे हैं। बिल्कुल अपनी मस्ती में मस्त है। जो कुछ कार्य कर रहे हैं, ईश्वरीय मस्ती से कर रहे हैं। मुख से कुछ बोल नहीं रहे हैं। उनको चलता हुआ नहीं देखते हैं। निमित्त मात्र कर्मेन्द्रियों से कर रहे हैं। बाकी दृष्टि-वृत्ति में सबका भला हो, एन्जिल रक्षक हैं।

9) नवीनता क्या लानी है? जरा भी साधारणता संकल्प में न हो, स्वच्छता और श्रेष्ठता। स्वच्छता तो ऐसी जैसे बीज, ताकत है उसके अन्दर में, दिखाई नहीं पड़ता है परन्तु पता है कि ये बीज क्या है। फ्लावर की खुशबू ले फिर सूख जायेगा। इतने लम्बे-लम्बे कार्ड क्या करेंगे? बच्चों को खुश करने के लिए बाबा भी महिमा कर देता है। परन्तु बच्चे याद और प्यार को ऐसा अन्दर में समा लेवें जो याद स्वरूप बन जायें।

10) जो भविष्य सोचते हैं, यज्ञ का क्या होगा, कौन खिलायेगा.... ऐसे सोचने वाला क्या बाबा से रूहारिहान करेगा! इतनी सत्यता हो, स्वच्छता हो। मन बहुत बात करता है, तूफान मचाता है, कभी अपनी बात को राइट सिद्ध करता है। मन, बुद्धि को शान्त होने नहीं देता है, तो खतरा है। अपने लिए समझना चाहिए, जब चाहूँ शान्त हो सकती हूँ। बाबा के सामने जाकर भी बैठेंगे तो कभी आंसू आयेंगे, कभी कम्पलेन देंगे। शान्त होना जब तक नहीं सीखें हैं तो कदम आगे नहीं बढ़ता है। भले कितना भी मेहनत करते हैं, पर जैसे कोई पकड़ के बैठा है या खुद पकड़के बैठ गये हैं, अपने स्वभाव-संस्कार के वश। स्वभाव अन्दर का है संस्कार बातचीत चलन में है।

11) इस बात पर विचार करें कि लाइट किसको कहा जाता है, डबल लाइट किसको कहा जाता है? शान्ति के अनुभव की छाप लगती है। पर हमारे अन्दर ऐसी शक्ति भरी हो जिससे दूसरे भी शान्त हो जायें। अन्दर की शान्ति, रीयल शान्ति, परमात्मा से मिली हुई गिफ्ट की शान्ति। कईयों को दूर बैठे भी शान्ति की शक्ति मदद करती है। बिचारी तड़पती हुई आत्मा को एक बूंद पानी की मिल जाती है।

12) संस्कारों में भी प्यूरिटी के शक्ति की शान्ति आई। शान्तिधाम जाने की शान्ति आई। अभी पवित्र पावन बनने का पार्ट है। हम हर समय विश्व की स्टेज पर हीरो पार्टधारी हैं। अभी विश्व में सर्व आत्मायें नीचे आई हुई हैं। उसमें से परमात्मा ने चुन लिया है। बहुतकाल से उसके साथ रहे हैं, वो जो कराने चाहता है वो कराया है। हमारी चाहना खत्म कर दी है। विचार चलाने की जरूरत नहीं है और किसी से पूछने की भी जरूरत नहीं है। जो बाबा ने कहा वो कर। अरे! भगवान सम्मुख कह रहा है, मैं सोच रही हूँ। सोच विचार वाली मध्यम क्वालिटी वाली आत्मा है।

उत्तम पुरुषार्थी कभी सोचता नहीं है, न किसी को सोचने देता है। बाबा से हम बच्चों को इतनी जो पालना मिली है, जो पढ़ाया है, वह हमारे चलने वा देखने से कुछ अन्दर अच्छा करने की प्रेरणा मिले, शक्ति मिले।

13) जहाँ तक जीना है वहाँ तक सीखना है। बच्चों को लायक बनाना, बाबा के लिए कोई मासी का घर थोड़ेही है। बाबा कितनी मेहनत करता है। कई अपने को राइट समझते हैं, वह बाबा की शिक्षाओं को धारण कैसे कर सकेंगे। बाबा हमारा सौदागर, रत्नागर, जादूगर है। सयाने लोग पहले सौदा करते हैं, सौदा करने में टाइम नहीं गंवाते हैं। स्व में परिवर्तन ऐसे हो गया जैसे जादू। पहले स्वभाव-संस्कार मिलते नहीं थे, अभी अच्छे, सबके साथ सहज मिलनसार हो गये। किसी को मेरे से डिफीकल्टी है, मेरे को उससे डिफीकल्टी है, जब तक यह है तो कहाँ तक पुरुषार्थ है।

14) कई कुमार हैं जो सिर्फ अच्छी कम्पनी से बदल गये हैं। सबसे अच्छा संग है पारस का। वह कुछ करता नहीं है, अपने संग से लोहे को सोना बना देता है।

15) जितनी अन्दर-अन्दर बाबा से बातें करते हैं उतना मीठा लगता है। जरा सा भी मैं कडुआ न बोलू। इसका भी ब्राह्मण परिवार से सर्टीफिकेट चाहिए। बाबा प्राइज़ तभी देगा। ज्ञान को अमृत के रूप में पहले पियो फिर पिलाओ। ब्राह्मणों को ज्ञान नहीं देंगे। मीठे शब्दों की लेन-देन कर सकते हैं, जिसमें एक दो के प्रति प्यार और रिगार्ड हो। किसी के प्रति मेरी नफरत की निगाह न हो। अन्दर में अन्तर्मुखी होकर सच्चाई और प्यार से व्यवहार करेंगे तो दूसरों का ध्यान जायेगा।

16) हमारे संकल्पों में दृढ़ता हो। समय की बहुत कदर हो, हम संगम के समय को ऐसे ही नहीं गंवा सकते। बाबा जो करा रहा है, वही मुझे पर्सनल करना है। सिम्पुल बात है। बाकी पुरानी या पराई बात मेरे दिल में अगर जरा सा भी है तो बाबा मुझे मदद नहीं कर सकता। कहेगा अभी तक यह अपनी ही चंचल बुद्धि के अभिमान में है। बाबा की शक्ति मिले, दुआयें मिलें, वो अभी बाबा से ले लो प्यार से तो बहिस्त हमारे हाथों में हैं, लोग भी देखें कि ये स्वर्ग लाने वाली आत्मा हैं।

17) खुद को चेन्ज करना सहज है, दूसरों को चेन्ज करने में तकलीफ है। वे तो अपने पुरुषार्थ से ही होंगे। मैं तो शुभ भावना रखूंगी, चिन्तन करूंगी तो फालतू टाइम नहीं गंवाऊंगी। खुद ऐसा चेन्ज हो जाये, तो बाबा और परिवार की गुडविशेश मिलेगी। समस्याओं का बर्थ कन्ट्रोल करो। कोई नई समस्या पैदा ही न हो, इतना तो योगबल से बर्थ कन्ट्रोल करो। न पैदा होगी, न बढ़ेगी, न सिर खपायेगी।

## अभी हम पुरुषार्थी नहीं, यह एक्जाम के दिन हैं, अभी हमें पास विद ऑनर होना है (दादी प्रकाशमणि जी - 1982)

**कई पूछते हैं कि हम क्या पुरुषार्थ करें? हम कहती कि**  
1) बाबा ने जो निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी का मन्त्र दिया है, वह सदा याद रहे। उसका ही पुरुषार्थ करो। 2. जीवन में त्याग, तपस्या, सेवा यह है हमारा पुरुषार्थ। 3. हमें बाबा समान कर्मातीत, साक्षात्कार मूर्त बनना है। इसमें सब कुछ आ जाता, बुद्धि दिव्य हो जाती है।

2) कई कहते हैं हम क्या करें हमारी तो पुरुषार्थी लाइफ है, वातावरण ऐसा है.. गलतियाँ हो जाती हैं, पुरुषार्थी हूँ। यह पुरुषार्थी हूँ, पुरुषार्थी हूँ.. कहकर उसकी भी पालना करते हैं। अब तक भी हम यही शब्द कहते रहेंगे तो यह भी जैसे उनकी पालना करते हैं। क्यों नहीं कहते कि हमारे एक्जाम के दिन हैं, पढ़ाई पूरी हुई, अभी हमें पेपर में पास विद ऑनर होकर दिखाना है। अभी कोई नया लेसन मिल रहा है क्या? या और कोई नया लेसन मिलने वाला है? बाबा ने सब कुछ पढ़ा दिया। मुरली ही बाबा की पढ़ाई है। उसको रिवाइज करते भी नित्य नई लगती है, परन्तु महावाक्य तो पुराने ही हैं ना। पढ़ाई तो हमारी पुरातन से पुरातन चली आ रही है, आदि में मनमनाभव, अन्त में भी मनमनाभव। नया जन्म मिला, वर्सा बाबा ने दे दिया, अधिकारी बना दिया, बाकी क्या चाहिए। सिर्फ अशरीरी बनने की मेहनत करनी है। यह योग की गहरी अनुभूति जितनी हम करें उतनी थोड़ी है, कम है। ज्ञान सागर बाबा ने जो हमें गुणों का खजाना दिया है, बुद्धि में वह भरपूर रखें, वह कमाई हमारे जमा के खाते में भरपूर होती रहे।

3) कई चलते-चलते थक जाते हैं लेकिन हमारा बाबा कभी थकता है? तो हम भी बाबा जैसे अथक क्यों नहीं बनते हैं। इसके लिए टाइम पर सोओ, टाइम पर उठो तो थकावट की बात ही नहीं। लेकिन थकावट तब होती है जब दिलशिकस्त होते हो, अलबेले होते हो। तो न हमें अलबेला होना है, न सुस्त होना है। सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और उल्लास के दो पंख सदा रखो। तीसरा अपनी रुहानी मौज मस्ती में रहो। कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती एक कान से सुनकर दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है, कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। जैसे इस कान में पानी पड़ा है तो यहाँ से ही निकालेंगे ना, ऐसे ही यहाँ से ही सुनो यहाँ से ही निकाल दो। यहाँ की बात फालतू यहाँ तक भी क्यों घुमायें। उसे निकालने के लिए क्यों टाइम वेस्ट करें, यह भी रांग है।

4) अब ऐसी कोई घड़ी न आये जो अन्दर बेचैनी व हैरानी महसूस हो। मैं आज हैरान हूँ, परेशान हूँ, अब इस भाषा को समाप्त कर दो। न ऐसी कोई बात सुनो, न हैरान हो। किसी की फालतू बातें न

सुनो, न उसका चिंतन करो। हाँ, किसी का मन भरा हुआ है तो जिसकी ड्यूटी है उसके पास जाकर सुनाके मन को हल्का करे। हमें किसी की बातें सुनकर उसे टेका नहीं देना है।

5) ऐसे नहीं आपने दिल हल्की की और मैंने वह बात सुनकर दिल भारी कर ली। नॉट एलाऊ, इसलिए हमें न भारी होना है, न किसी को भारी करना है। न कभी मन को भारी रखना है। बात आई सेकेण्ड में समाप्त हुई। इसी को कहा है ड्रामा की बिन्दी लगाना सीखो - इसकी विधि है ड्रामा, बिन्दू। बातें आयेंगी परन्तु आयी, गयी।

6) सबसे पहले हमारी एक शुभ आशा है कि हम ब्राह्मणों का आपस में अति स्नेह हो। यह जो कई बार चाहे दो रहते हैं या दस रहते हैं, यदि आपस में दो का प्यार होता, दो का नहीं तो यह थोड़ा मतभेद पैदा करता और उसी से फालतू के व्यर्थ संकल्प एक दूसरे के प्रति चलते या वर्णन भी होते या तो महिमा करते या फिर बदनाम भी करते इसलिए सभी वायदा करो कि हमें आपस में अति स्नेह के साथ अलौकिकता के रूप में रहना है।

7) हर एक के प्रति हमारे अन्दर सदा शुभ संकल्प रहें। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो जो सूक्ष्म में भी व्यर्थ का नाम निशान समाप्त हो जाए। ऐसी अलौकिकता सम्पन्न हमारी आपस में दृष्टि, वृत्ति रहे जिससे सबको शुभ भावनाओं की सकाश मिलती रहे। ऐसी शुभ सकाश एक दो में दो भी, लो भी। तो अब पुराने संस्कारों से मुक्त हो, सम्पन्न बनने का चार्ट बनाओ।

8) अब चारों तरफ योगबल के साइलेन्स की शक्ति के वायब्रेशन फैलाओ जो अनेकों के अनेक उल्टे-सुल्टे फालतू के विघ्न होते, समाज के, पब्लिक के, गांव के या शहरों में जो उल्टे वायब्रेशन हैं, वह सब इस सूक्ष्म योगबल से समाप्त हो जाएं। योगबल से ही हमारी विजय है।

9) बाबा का यह शब्द पक्का याद रखो कि हमें एवररेडी बनना है। हमारे कारण कभी बाबा की बदनामी न हो। हमें इतना ऊंचा बाबा मिला है तो ऊंचे बाबा के साथ हमारी स्थिति भी इतनी ऊंची हो। इसके लिए दो बातें ध्यान पर रखो:- एक, बेहद का वैरागी बनना है। दूसरा, बेहद का त्यागी बनना है। साथ-साथ सन्तुष्टता की खान बनकर रहना है।

10) संगठन में रहते कभी मतभेद न हो इसके लिए पहले एक दो के विचारों को सम्मान देकर सुनो। अगर दिल में सम्मान होगा तो सभी आपके निर्णय को मानेंगे। नॉलेज हमें सिखाती है - बड़ों का रिस्पेक्ट करो, छोटों को प्यार करो। कोई भी बात छोटों को प्यार से कहेंगे, बड़ों को सम्मान देकर कहेंगे तो वह हमारी बात मान लेंगे। अच्छा, ओम् शान्ति।